वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में युवा असन्तोष का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

(आगरा नगर के उच्च शिक्षण संस्थानों के विशेष सन्दर्भ में)

दयालबाग एजूकेशनल इन्स्ट्ीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय)
के अन्तर्गत पीएच०डी० (राजनीति विज्ञान) की
उपाधि हेतु प्रस्तावित
रूपरेखा

शोध निर्देशिका

प्रो० वन्दना गौड़
समाजशास्त्र एवं राजनीति विज्ञान विभाग
समाज विज्ञान संकाय

शोधार्थिनी

सुरभि त्यागी
(राजनीति विज्ञान)

समाजशास्त्र एवं राजनीति विज्ञान विभाग, समाज विज्ञान संकाय
दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट, (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा – 282005
2020

प्रस्तावना–

किसी भी देश का भविष्य युवाओं की वस्तुस्थिति पर ही निर्भर करता है कोई भी राष्ट्र तभी विकसित होगा जब वहाँ की युवाशक्ति मजबूत हो और युवा जागरूक हो। युवा वर्ग केवल भारत में ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। किसी भी देश का विकास युवा पीढ़ी की मेहनत और समर्पण से ही आगे बढ़ता है। परन्तु आज युवा वर्ग अशान्ति का प्रतीक होता जा रहा है और उसे अनुशासनहीन माना जा रहा है। वैश्वीकरण में युवाओं एवं समाज को बहुत हद तक प्रभावित किया है। वैशविक परिवर्तन मुख्य रूप से सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, तकनीकी और जनसांख्यकीय रूप में देखने को मिलता है। युवाओं को अपने अन्दर एक नये कौशल और आदतों को विकसित करने की आवश्यकता होती है। जो आजकल की शिक्षा प्रणाली से बहुत आगे है। वैश्वीकरण ने स्थायी आर्थिक विकास के नए अवसर खोले है। वैश्वीकरण ने युवाओं को न केवल दुनिया के अन्य हिस्सों में बल्कि एक दूसरे से जोड़ने में भी मदद की है। कई युवा विशेष रूप से विकासशील देशों में वैश्विक अर्थव्यवस्था से असंतुष्ट है वे उन अवसरों तक पहुँचने में असमर्थ है जो अपर्याप्त शिक्षा, सीमित कौशल, गरीबी के कारण वैश्वीकरण को पेश करते है। और उन जानकारी संचार और वैश्वीकरण के साथ उपलब्ध होने वाली वस्तुओं और सेवाओं तक नहीं पहुँच सकते है। वैश्वीकरण के नकारात्मक प्रभाव में हमें धनवान और गरीब का अन्तर देखने को मिलता है। वैश्वीकरण सामाजिक परिवर्तन प्रक्रिया का ही एक विकसित रूप है। वैश्वीकरण के माध्यम से ही सामजिक परिवर्तन को तीव्र गति मिलती है, परिवर्तन वैश्वीकरण का लक्षण होने के साथ–साथ उसका लक्ष्य भी है। भूमण्डलीकरण, साम्प्रदायिकता और सैन्यीकरण की ताकतों द्वारा बनाये जा रहे दबावों के कारण आज युवाओं में बहुत हद तक आत्महत्या, गैर कानूनी गतिविधियाँ आदि बढ़ती जा रही है। अग्रेंजी के ग्लोबलायजेशन (Globalization) शब्द के लिए हिन्दी में भूमण्डलीकरण शब्द का प्रयोग किया जाता है। जिसका शाब्दिक अर्थ स्थानीक या क्षेत्रीय वस्तुओं या घटनाओं के विश्वस्तर पर रूपांतरण की प्रक्रिया है। यह एक ऐसी प्रक्रिया का वर्णन करने के लिए भी प्रयुक्त किया जा सकता है। जिसके द्वारा पूरे विश्व के लोग मिलकर एक समाज बनाते है तथा एक साथ कार्य करते हैं। यह प्रक्रिया आर्थिक, तकनीकी, सामाजिक और राजनीतिक ताकतों का संयोजन है।

वैश्वीकरण एक मिश्रित प्रक्रिया है इसकी उपस्थिति और प्रभाव समाज के प्रत्येक क्षेत्र में देखने को मिलता है। सभी विकसित विकासशील अथवा पिछड़े देशों ने अपनी सामाजिक आर्थिक शैक्षिक सांस्कृतिक तथा राजनीतिक विकास के लिए वैश्वीकरण की प्रक्रिया को अपनाकर एक महत्वपूर्ण आयाम को प्रदान किया है।

19वीं सदी के स्वर्णमानक और उदारीकरण को वैश्वीकरण के उदय का काल माना जाता है। 19वीं सदी के पहले से ही विश्व के आर्थिक स्तर पर हो ही रहे आर्थिक, सामाजिक, सामरिक और कूटनीतिक परिवर्तनों की महत्वपूर्ण कड़ी के देश रहे हैं जो आज तीसरी दुनिया के नाम से जाने जाते है। सन् 1970 के दशक तक आते–आते दुनिया में कई ऐसे परिवर्तन देखने को मिले जिससे दुनिया में गरीबो की संख्या अशोभनीय स्तर तक बढ़ गई और विदेशी कर्ज के कारण राजकोषीय घाटा एक अहम मुद्धा बन गया। 20वीं सदी के 50 और 60 के विश्व अर्थव्यवस्था में बहुत परिवर्तन आया उद्योगों के बदले सेवाओं तथा वित्तीय क्षेत्र का योगदान बढ़ने लगा। भारतीय समाज की ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि पर ध्यान दे ंतो वैश्वीकरण की अवधारणा कोई नई नहीं है हमारे प्राचीन धर्मग्रन्थों और वेदों में जिस सांस्कृतिक व्यवस्था के लिए 'वसुधैव कुटुम्बकम्' अर्थात् सम्पूर्ण वसुधा एक परिवार की बात कही गई है जो कि वैश्वीकरण के आर्दश के रूप में प्रकट करता है। वैश्वीकरण एक आर्दश भविष्य की आदर्श व्यवस्था और प्रारूप को तैयार करता है। भारत में 1991 में अपनाई गई नई आर्थिक नीति से भूमण्डलीकरण की शुरूआत हुई।

मथाकोल्म वेटर्स के अनुसार, ''वैश्वीकरण एक सामाजिक प्रक्रिया है। भूगोल द्वारा सामाजिक और सांस्कृतिक व्यवस्थाओं को दबाया जाता है। जिससे लोग इस बात के लिए जागरूक होने लगते हैं कि उनका प्रश्न प्रवण हो रहा है।''

एंथानी गिडेन्स के अनुसार, ''विश्वव्यापी आधार पर सामाजिक सम्बन्धों को घनिष्ठ बनाने का नाम ही वैश्वीकरण है। यह प्रक्रिया दूरस्थ इलाकों को इस प्रकार जोड़ती है कि मीलों दूर उत्पन्न हुई घटना का प्रभाव स्थायित्व घटनाओं पर भी है और इसी प्रकार स्थानिक घटना का असर कई मीलों दूर तक देखा जा सकता है। यह प्रक्रिया विश्व को एक गाँव के निर्माण की कल्पना करती है।''

वर्तमान समय में हमारा देश विभिन्न हिंसात्मक गतिविधियों से गुजर रहा है। जिसमें महत्वपूर्ण गतिविधि है युवाओं में असंतोष जिसके चलते युवा भी विभिन्न प्रकार की हिंसात्मक गतिविधियों में शामिल हो रहा है। और इसके लिए अनेक प्रकार की साधनों का उपयोग करता है जैसे तोड़–फोड़, मार–पीट, हड़ताल, आगजनी इत्यादि वर्तमान समय में राष्ट्र के हर क्षेत्र में असंतोष पनप रहा है। युवाओं में उत्पन्न असंतोष के बहुत से कारण है जिसमें सबसे महत्वपूर्ण कारण है बेरोजेगारी आज का युवक या युवती शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी बेरोजगारी की स्थिति में है। बिगड़ती शिक्षा प्रणाली भी युवाओं में असंतोष का कारण है जैसे कि युवाओं को समय पर डिग्री न मिलना, फीस की बढोत्तरी, भ्रष्टाचार इत्यादि। आज युवा तनाव या छात्र असंतोष एक सामाजिक, समस्या के रूप में है। यह असन्तोष सम्पूर्ण समाज एवं राष्ट्र के लिए एक चुनौती है। शिक्षा प्रणाली, राजनेता और प्रशासक इस समस्या की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट करने और इसे सुलझाने के लिए सुझाव प्रस्तुत करते रहे हैं परन्तु फिर भी यह समस्या आज भी ज्यों कि त्यों बनी हुई है।

आज का युवक अपने चारों ओर की परिस्थितियों और अपने अधिकारों के प्रति सजग है। वह आज अपनी आकांक्षाओं को पूर्ण होते हुए नहीं देखता है। शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् भी वह कोई नौकरी प्राप्त नहीं कर पाता है। वह जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में व्याप्त भ्रष्टाचार को देखता है। वह आर्थिक दृष्टि से अपने आप को असुरक्षित महसूस करता है। साथ ही आज का युवक वर्ग दिशाहीन है, यद्यपि इसके लिए सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक परिस्थितियाँ विशेषतः उत्तरदायी है। योग्य नेतृत्व का अभाव ही छात्र असंतोष की दिशाहीनता के लिए काफी जिम्मेदार है। युवा असंतोष्ष का क्षेत्र काफी व्यापक है यह अनेक रूपों में देखने को मिलता है। शिक्षा के क्षेत्र में, आर्थिक क्षेत्र में, राजनीतिक क्षेत्र में और सार्वजनिक क्षेत्र में।

युवा शक्ति किसी भी देश की वह ताकत है जो उसके भविष्य को बदल सकती है। युवाओं में भी अधिकतर संख्या छात्र–छात्राओं की है क्योंकि वे इस अवस्था में अपने जीवन के लिए विद्या रूपी शक्ति अर्जित करते हैं।

डॉ० वेद प्रकाश ने युवा को परिभाषित करते हुए लिखा है कि ''युवा किशोरावस्था से निकलकर युवावस्था में प्रवेश करता है। युवा शारीरिक परिपक्व बौद्धिक परिपक्व नैतिक परिपक्व और सामाजिक

परिपक्व होता है। इन सभी गुणों से युक्त युवा शक्ति विश्व का संचालन मुख्यतः युवाओं द्वारा युवाओं के लिए होता है।''

जी० एस० गौतम ने युवा समस्या के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए लिखते हैं कि ''भारत में युवा समस्या बहुधा संकुचित एवं वैयक्तिक शिकायतों एवं मार्गों से प्रारम्भ होती है और उसका परिणाम बहुधा सार्वजनिक सम्पत्ति की विशाल क्षति और कभी–कभी घृणित हिंसा का विस्फोट होता है।''

युवा असंतोष और युवा आन्दोलन कोई नया प्रक्रम नहीं है। 18 मार्च 1974 को जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में पटना में छात्र आन्दोलन की शुरूआत हुई थी।

विश्व में किसी भी देश का इतिहास देखें तो युद्ध में युवाओं के कारण ही जीत हासिल हुई है। भारत में आजादी के वक्त युवाओं ने अहम् भूमिका निभायी थी। भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु जैसे अनेक युवाओं के कारण ही भारत को आजादी मिल पाई। विश्व में कई ऐसे संगठन रहे हैं, जिन्होंने अपने देशों में बदलाव लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। भारत में यहुदी युवा आन्दोलन, इंडोनेशिया आन्दोलन 1998, दिल्ली निर्भया आन्दोलन इत्यादि में महत्वपूर्ण भमिका निभायी है।

छात्र आन्दोलन की प्रवृत्तियाँ स्वतन्त्रता से पूर्व भी विद्यमान थी जिसके चलते 1848 में दादाभाई नौरोजी ने स्टूडेंट्स सांइटिफिक एंड हिस्टोरिक सोसाइटी की स्थापना छात्र मंत्र के रूप में की थी। 1913 में लाहौर में अंग्रेजी छात्रों और भारतीयों के बीच अकादमिक भेदभाव के विरोध में हड़ताल स्वदेशी आन्दोलन (1905)। स्वतंत्रता के बाद देखें तो अखिल भारतीय युवा संघ (1959), नक्सलवादी आन्दोलन (1967), मंडल विरोधी आन्दोलन इत्यादि। भूमण्डलीकरण के युग में महिला छात्र आन्दोलन, अखिल भारतीय छात्र संघ (1990), साइवर कार्यकर्ता छात्र आन्दोलन यह सभी कहीं न कहीं छात्र आन्दोलन का ही परिणाम है।

युवा असन्तोष का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। यह कई रूपों में देखने को मिलता है। मुख्य रूप से युवा असन्तोष के चार क्षेत्र है। शिक्षा के क्षेत्र में, आर्थिक क्षेत्र में, रानीतिक क्षेत्र में और सार्वजनिक क्षेत्र में। आज कोई भी ऐसा विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय शेष नहीं है जहाँ हमें युवा असन्तोष देखने को न मिले। छोटी मोटी बातों को लेकर विद्यार्थी आये दिन हड़ताल करते रहते हैं। अध्यापकों,

प्राचार्यों, उपकुलपतियों एवं प्रशासकों के विरुद्ध नारे लगाते हैं और मार–पीट करते है। कभी प्रवेश को लेकर तो कभी छात्रसंघ के चुनावों को लेकर।

आर्थिक असुरक्षा भी युवा असन्तोष का एक महत्वपूर्ण कारण है। युवा शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् भी सक्षम नौकरी प्राप्त नहीं कर पाता। विशेष रूप से पश्चिमी बंगाल में आर्थिक क्षेत्र में छात्र सक्रियता का उग्र रूप देखने को मिलता है। वहाँ युवा वर्ग उद्योगपतियों के खिलाफ आन्दोलन चलाते है। लूटपाट, मारपीट और हत्याएँ तक करते है। वहाँ वे हिंसात्मक तरीके तक अपनाकर अपने आर्थिक हितों की पूर्ति का प्रयत्न करते है। मध्य प्रदेश के स्कूलों, कॉलेजों एवं विश्वविद्यालयों में आरक्षण के विरोध में फरवरी व मार्च 1985 में हड़ताल रही। क्योंकि लगभग 58 प्रतिशत स्थान नौकरियों में अनुसूचित जातियों एवं जनजातियों के लिए आरक्षित कर दिए गए। इससे अन्य जातियों के योग्य छात्रों के नौकरियों के अवसर कम हो गये।

सभी राजनीतिक दल अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु युवा वर्ग की शक्ति को आधार बनाते हैं वे कई बार युवकों व विद्यार्थियो को गुमराह करके उन्हें अव्यवस्था फैलाने, बाजार बन्द कराने, और तोड़–फोड़ आदि कराने में प्रयुक्त करते हैं।

आज अनेक राजनीतिक दलों के अपने–अपने युवा संगठन' पाये जाते हैं। ये दल युवकों की शक्ति का दलीय स्वार्थों की पूर्ति के लिए प्रयोग करते हैं न कि राष्ट्रहित के लिए। छात्र सक्रियता का राजनीतिक क्षेत्र में उग्र रूप पश्चिमी बंगाल में नक्सलवादी आन्दोलन के रूप में प्रकट हुआ जहाँ युवक संगठित रूप में तोड़–फोड़ , लूटपाट, आगजनी और हत्याओं के माध्यम से रानीतिक परिवर्तन लाना चाहते थे।

आज सभाओं, बाजारों और खेल के मैदानों में छात्र सक्रियता स्पष्टतः देखने को मिलती है। सभा–सम्मेलनों और सांस्कृतिक समारोहों में प्रवेश को लेकर, सिनेमाघरों व खेल के मैदानों में टिकटों को लेकर और अन्यत्र अन्य किसी कारण को लेकर आये दिन मारपीट होती रहती है।

युवाओं में असन्तोष को लेकर बहुत से कारण जिम्मेदार है। युवा असन्तोष के लिए शिक्षण व्यवस्था से सम्बन्धित कई कारक उतरदायी है। शिक्षण संस्थाओं में पर्याप्त सुविधाओं का अभाव, परीक्षा

एवं प्रवेश प्रणाली छात्र एवं अध्यापकों के सम्बन्ध में दूरी , दोषपूर्ण एवं अनुपयोगी शिक्षा। युवा असन्तोष के लिए पारिवारिक पृष्ठभूमि एवं परिस्थितियाँ भी उत्तरदायी है।

नयी या युवा पीढ़ी और वृद्ध पीढ़ी के बीच पाये जाने वाला अन्तर युवा असन्तोष के लिए काफी सीमा तक उत्तरदायी है। कुछ हमारे देश की वर्तमान परिस्थितियाँ इसके लिए उत्तरदायी है, तो कुछ उत्तरदायित्व हमारी त्रुटिपूर्ण राष्ट्रीय नीतियों एवं दोषपूर्ण पद्धति का है।

समस्या कथन–

बदलते वैश्वीकरण के परिवेश में देश के हजारों लाखो युवक असन्तोष एवं आक्रोश के शिकार हो रहे हैं। वे आज कई प्रकार के तनावों से ग्रसित है। और यह तनाव युवकों में कई रूपों में देखने को मिलता है। जिसके परिणामस्वरूप वह हिंसात्मक गतिविधियों को बढ़ावा दे रहे हैं। और दिन–प्रतिदिन हिंसात्मक गतिविधियों में शामिल होते जा रहे हैं। जो किसी भी देश के विकास के लिए एक चिन्ताजनक विषय है। भारत में युवा असन्तोष युवकों में व्याप्त असन्तोष निराशा, तनाव, शिक्षण संस्थाओं में पायी जाने वाली कमियों, सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार एवं राजनीतिक दलों और नेताओं के स्वार्थ का ही परिणाम है। आज का युवा वर्ग कहीं न कहीं मौजूदा व्यवस्था से असन्तुष्ट दिखाई पड़ता है फिर चाहे वह असन्तुष्टि भाषा को लेकर हो या शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन के नाम पर या फिर मँहगाई या भ्रष्टाचार को लेकर। प्रत्येक क्षेत्र में युवा असन्तोष देखने को मिलता है। फिर चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो, आर्थिक क्षेत्र हो, राजनीतिक क्षेत्र हो या फिर सार्वजनिक क्षेत्र।

आज का युवक समाज के आदर्श नियमों को अपने में आत्मसात नहीं कर सका है। वह सामाजिक मूल्यों को भी अपने व्यक्तित्व का अंग नहीं बना सका है। ऐसी स्थिति में वह समाज की मान्य परम्पराओं की चिन्ता नहीं करते हुए अपने स्वयं के स्वार्थों की पूर्ति पर अधिक ध्यान देने लगता है। वह अपने उद्देश्यों की पूर्ति को महत्व देता है, चाहे उसे व्यवहार के अमान्य तरीके ही क्यों न अपनाने पढ़े। अतः इस सम्बन्ध में अध्ययन एवं शोध की अत्यन्त आवश्यकता है।

अध्ययन का महत्व–

युवा वर्ग केवल भारत में नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। किसी भी देश का विकास युवा पीढ़ी की मेहनत और समर्पण से ही आगे बढ़ता है। युवाओं से ही देश का भविष्य

तय होता है। जितनी मजबूत युवाशक्ति, जितने जागरूक युवा होगें उतना ही विकसित वह राष्ट्र होगा। इतिहास भी इस बात का साक्षी है कि जितने भी महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए है वह युवाओं से ही सम्भव हुए है। किसी भी देश का युवावर्ग उस देश का भविष्य, उसका कर्णधार होता है। और यदि यही युवा वर्ग अराजकता और दिशाहीनता का शिकार हो जाए तो यह किसी भी देश के विकास के लिए हानिकारक हो सकता है। उदारीकरण और वैश्वीकरण के युग में भारतीय समाज में तीव्र गति से परिवर्तन हुए है और इन्होंने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है। युवकों ने विश्व के अनेक देशों में महत्वपूर्ण रचनात्मक भूमिका निभायी है। सरकार द्वारा बनाये गये विभिन्न नियमों का देश की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक परिवर्तन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। विश्व एकीकरण के दौर में अन्य विकासशील देशों की भाँति हमारा भारत देश भी विकास की दौड़ में किसी से पीछे नहीं है। विगत कुछ वर्षों में देश में विकास की दर में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। विशेष रूप से विज्ञान एवं तकनीकी के क्षेत्र में आज हमारा स्थान अग्रणी देशों में है। इसका सम्पूर्ण श्रेय हमारे देश के युवा वर्ग को ही जाता है। जिसने यह सिद्ध कर दिया है कि वृद्धि ओर शक्ति दोनों में ही युवा वर्ग किसी से पीछे नहीं है। हमारे देश में प्रतिवर्ष लाखो की संख्या में डॉक्टर, इंजीनियर तथा व्यवसायी निकलते है जिनकी विश्व बाजार में विशेष माँग है। उपरोक्त विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए यह शोध अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण विषय है।

साहित्य का पुर्नविलोकन –

मिरडॉल (1960) ने स्पष्ट किया कि भारतीय समाज में अन्धविश्वास का फैलाव है और वैयक्तिक स्वतन्त्रता आर्थिक वृद्धि और राष्ट्रीय एकता के लगाव की कमी के कारण आधुनिक मूल्यों का पूर्ण विकास सम्भव नहीं हो पाया है। परिणामस्वरूप भारतीय समाज में आज तक भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया न तो विकसित हो सकी है और न ही अपना प्रभाव डाल सकी है।

प्रो० डौश्च (1961) भूमण्डलीकरण से सम्बन्धित अपने शोध अध्ययन के आधार पर लिखा है कि भूमण्डलीकरण परम्परागत पूर्व आधुनिक समाज के विभिन्न पक्षों की प्रौद्योगिकी की दिशा में होने वाले पूर्व परिवर्तन को कहते हैं। भूमण्डलीकरण सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तीनों क्षेत्रों से सम्बन्धित है।

रॉबर्ट सी. शॉ. (1968) ने उस्मानिया विश्वविद्यालय में विद्यार्थी राजनीति और विद्यार्थी नेतृत्व पर किये गये अपने अध्ययन के आधार पर अनेक महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकाले। आपने पाया कि छात्र नेताओं

के परिवारों की आय औसत परिवारों से अधिक है। सभी नेताओं का कथन था कि वे मध्यम परिवारों के सदस्य है, यद्यपि एक–तिहाई नेता धनी परिवारों से सम्बन्धित थे। सभी छात्र नेता उच्च जातियों से सम्बन्धित थे। शैक्षिक उपलब्धि की दृष्टि से यह पाया गया है कि 22–2 प्रतिशत विद्यार्थी उत्तम, 23.1 प्रतिशत साधारण तथा 56.7 प्रतिशत साधारण से निम्न थे। जब छात्र नेताओं से पूछा गया कि छात्र आन्दोलन में हिंसा का सहारा क्यों लिया जाता है, तो सभी ने यह बताया कि अधिकारी उस समय तक माँगों पर ध्यान नहीं देते जब तक कि केवल शान्तिपूर्ण साधनों को काम में लिया जाता है। जहाँ छात्र नेताओं को उनकी 'राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं' के सम्बन्ध में पूछा गया तो ज्ञात हुआ कि दो–तिहाई नेता आगे चलकर राजनीतिक के रूप में अपना जीवन संचालित करना चाहते हैं और राजनीति में आगे बढ़ने का एक प्रमुख साधन है। छात्र आन्दोलनात्मक गतिविधियों में सक्रिय रूप में भाग लेना।

उपाध्याय (1975) ने पूर्वी उत्तर प्रदेश में छात्र अशांति का सर्वेक्षण कर उसके करणों का पता लगाया जिनके अनुसार छात्रों में असंतोष माता–पिता अभिभावकों, शिक्षकों और प्रशासन के तनावपूर्ण सम्बन्धों के लिए जिम्मेदार है उन्होंने चार क्षेत्रों अर्थात् शैक्षणिक, प्रशासनिक, राजनीतिक, और सामाजिक आर्थिक रूप से श्रेणीबद्ध किया। तथा छात्र शिक्षक सम्बन्ध की अपर्याप्त अप्रभावी शिक्षण विधियों और भारतीय स्थिति के लिए एक शैक्षिक प्रणाली को अप्रासंगिक बताया जो शैक्षणिक क्षेत्र में इंगित किए जा सकने वाले सबसे महत्वपूर्ण करण थे। उन्होंने छात्र अशांति के कारण के रूप में छात्र संघों को मान्यता देने से मना कर दिया।

खुसरो (1982) ने दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्रों के रहने व कार्य करने की दशाओं पर एक सर्वेक्षण किया। सर्वेक्षण का उद्देश्य था कि दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्रों की रहने व कार्य करने की परिस्थितियाँ और कुछ चयनित विषयों पर उनके विचारों के बारे में पूछताछ करना था। सर्वेक्षण में छात्र सम्प्रदाय के दबावों और तनावों का परिक्षण किया गया। सामान्य असन्तोष व कारण मुख्य रूप से सामाजिक व आर्थिक था। देश में लोगों के गिरते हुए स्तर धार्मिक और नैतिक निर्देशों की अनुपस्थिति, आधुनिक सभ्यता का प्रभाव और प्राचीन मूल्यों का विनाश आदि सामाजिक कारक है। फैली हुई बेरोजगारी शिक्षकों का गरीब आर्थिक स्तर उत्तेजक क्रियाओं में उनकी सहभागिता आदि आर्थिक कारक है।

पार्सल एम. मेनगन (1993) में स्पष्ट किया है कि अभिभावक एवं बच्चों के मध्य मजबूत बन्धन एक ऐसी सामाजिक पूँजी है जो अभिभावकों की भौतिक उपस्थिति बच्चों पर ध्यान देने और उनके कार्यों में सक्रिय भागीदारी की माँग करती है यदि परिवार की यह सामाजिक पूँजी कमजोर होती है या ठीक ढंग से गठित नहीं होती, तो बच्चों में व्यवहारगत समस्याएँ उत्पन्न होती है और यदि यही सामाजिक पूँजी मजबूत और सुगठित होती है, तो युवाओं में आक्रमकता या अपराध की प्रवृत्ति कमजोर होती है।

श्री चौहान के. एस. (1994) ने वर्णन किया कि भूमण्डलीकरण में शिक्षा और शैक्षिक स्तर की भूमिकाऐं अहम है। शिक्षा के अभाव में हम भूमण्डलीकरण की कल्पना भी नहीं कर सकते।

वाजपेयी (2002) ने बदलते सामाजिक–सांस्कृतिक तथा आर्थिक परिदृश्य में बढ़ते आक्रमक प्रतिमानों का विश्लेषण किया है। इनका मानना है कि बदलते परिवेश में हिंसात्मक गतिविधियों की प्रवृत्ति स्तर तथा विकरालता प्रभावित हो रही है।

हेरेन्कोल (2006) ने अपने अध्ययन में स्पष्ट किया जो युवा कई तरह से जोखिम भरे माहौल में बड़े होते हैं, वे आक्रामक एवं अपराधिक गतिविधियों में दूसरे लोगों के सापेक्ष अधिक भाग लेते हैं।

कुमार (2007) ने बढ़ती बेरोजगारी को युवाओं में बढ़ती अशान्ति का मुख्य कारण माना है। वर्तमान समाज में सामाजिक–आर्थिक विषमता तेजी से बढ़ रही है। सम्पन्न युवा तो पढ़–लिख कर साफ्टवेयर इंजीनियर या डॉक्टर आदि बन जाते है जबकि समाज के निचले तबकों के युवा उच्च शिक्षा से वंचित रह जाते हैं। सरकारी नौकरियाँ कम होती जा रही है और बड़ी–बड़ी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों में उनके योग्य कोई पद नहीं होते। अतः ऐसे युवा रोजगार के अभाव में हिंसात्मक गतिविधियों में शामिल हो जाते हैं।

चन्नवीर, आर० एम० (2010) वर्णन करते हुए छात्र अशांति के सामाजिक और आर्थिक दृष्टिकोण का अध्ययन किया है कि किस प्रकार से छात्रों में व्याप्त अशांति भारत और पूरे विश्व की शैक्षिक प्रणाली के लिए एक गम्भीर घटना है। भारतीय समाज की सामाजिक विसंगति और छात्र लोक के राजनीतिकरण ने शैक्षिक संस्थानों को ओर अधिक गतिशील संगठन बना दिया है। नवउदारवाद का भी वर्णन किया है। नवउदारवाद बदलते सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ के साथ उत्तर आधुनिकतावाद का उभरना उच्च शिक्षा के लिए एक बड़ी चुनौती है। वर्तमान में भारतीय समाज हर दशक में विभिन्न

बदलावों से गुजर रहा है। विभिन्न क्रान्तियों तथा आन्दोलनों ने समय–समय पर समाज का स्वरूप बदल दिया है। भारतीय समाज में तकनीकी, नये विचारों और सामाजिक रचनावाद ने लोकतन्त्र को मजबूत किया है परन्तु व्यापक परिवर्तन के लिए हिंसावादी विचारधारा ने भारतीय समाज को खतरे में डाल दिया है।

राउल (2012) अपने शोध पत्र 'डिकोडिग डिसेंसी एण्ड वायलेस : रोल ऑफ यूथ इन कंटम्परेरी ओडिशा' में समाकालीन उड़ीसा के सन्दर्भ में हिंसा में युवाओं की भूमिका, राज्य नीतियों में जन शिष्टाचार की कमी तथा सांस्कृतिक शिष्टाचार का विश्लेषण किया है। शोधकर्त्ता का मत है कि उड़ीसा राज्य की नीतियों में जन भावनाओं की कमी के कारण युवाओं में हिंसात्मक प्रवृत्ति बढ़ रही है। सामाजिक स्थितियाँ जहाँ अपराध को कम करती हैं वहीं कुछ सामाजिक परिस्थितियाँ ऐसी होती है जो अपराध को बढ़ाती है। जिस समाज में व्यक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति होती है उनके हितों को ध्यान में रखा जाता है। व्यक्ति अपना निर्वाह सही तरीके से करता है इसके विपरीत जहाँ समाज में परस्पर सहयोग न हो, व्यक्तिगत स्वार्थ को महत्त्व दिया जाता है जिनसे व्यक्ति अनैतिकता की ओर अग्रसर होता है।

देवी (2013) ने अपने शोधपत्र में राजनीति के अपराधीकरण का विश्लेषण करते हुए कहा है कि भारत में लगभग 11.57 प्रतिशत शिक्षित बेरोजगार, शिक्षित–अशिक्षित पूर्ण बेरोजगार और अर्द्ध बेरोजगार है। राजनीतिक व्यवस्था में अपराधियों के बढ़ते प्रभाव एवं शासन व्यवस्था में सम्मानजनक स्थिति प्राप्त होने के कारण ही शासन की क्षमता और गुणवत्ता में उत्तरोक्तर कमी आयी है।

शर्मा एवं मरिमुत्थू (2014) ने युवाओं में उत्पन्न होने वाली आक्रामकता की स्थिति और उपक्रमी का वर्णन किया है। उन्होंने विभिन्न सामुदायिक स्थानों, विद्यालय, आवासीय क्षेत्र जम्मू, बंगलौर, इन्दौर, केरल, राजस्थान, सिक्किम एवं दिल्ली से युवाओं का चयन कर युवाओं में आक्रामकता की स्थिति एवं उनके कारकों का पता लगाया। युवा आक्रमकता के लिए जो भी कारक जिम्मेदार है उनमें बचपन में शारीरिक शोषण, पारिवारिक हिंसा, शैक्षिक अशान्ति, एकाकीपन, इत्यादि शामिल है।

शर्मा (2014) ने भारतीय युवाओं की बदलाव तीव्र छवि का वर्णन करते हुए आधुनिक भारतीय युवाओं की अशांति के कारणों और परिणामों को स्पष्ट किया है और उन्होंने युवा अशांति के मानकों में

विभिन्न पहलुओं को शामिल किया है जैसे जनता की चिन्ता, मौजूदा मानदण्ड़ों में बदलाव, सामूहिक असंतोष इत्यादि। इसके साथ में युवाओं के नेतृत्व की गुणवत्ता की भी विवेचना की उन्होंने बताया है कि नेतृत्व युवा आन्दोलन और आन्दोलन की तीव्रता और दिशा को प्रभावित करता है।

शहाना अंजुम, आसिया ऐजाज (2014) ने युवा पीढ़ी के महत्व को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि किसी भी देश की प्रगति और विकास का महत्वपूर्ण आधार युवा वर्ग है। किसी भी देश का विकास युवा पीढ़ी की मेहनत और समर्पण से आगे बढ़ता है। आगे उन्होंने बताया है कि एक छात्र समुदाय प्रत्येक समाज में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। युवा पीढ़ी को केवल भारत में ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में एक महान शक्ति माना। परन्तु आज युवा वर्ग चिन्ता का विषय बना हुआ है। आज छात्रों में जिस प्रकार से अशांति और अनुशासन हीनता बढ़ती जा रही है यह एक चिन्ता का विषय है। जिसके परिणामस्वरूप छात्र हिंसा, आगजनी, हड़ताल, कक्षाओं के बहिष्कार इत्यादि प्रवृत्तियाँ दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। छात्र अशांति के कारणों का विश्लेषण तथा छात्रों की अशांति के कुछ सामान्य कारणों की पहचान की गई। जिसके परिणामस्वरूप नकारात्मक शिक्षा प्रणाली लक्ष्यहीन जीवन और अनिश्चित भविष्य, आर्थिक कठिनाईयाँ, दोषपूर्ण शिक्षण विधियाँ, छात्र संघ, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों द्वारा शैक्षणिक संस्थान की अपर्याप्त निधि इत्यादि छात्र अशांति के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके साथ ही साथ उन्होंने छात्र अशांति को रोकने के उपचारों की भी वर्णन किया है।

सुचदेव एस० (2015) ने विकासशील देशों में युवाओं के समक्ष आने वाली चुनौतियों के समाधान को स्पष्ट किया। विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के वैश्वीकरण में युवा लोग अक्सर सांस्कृतिक रूप से निर्धारित होते हैं और उन परिस्थितियों से प्रभावित नहीं हो सकते जहाँ कई सांस्कृतिक नियम संचालित होते हैं। भारत एक सामुहिक संस्कृति के नाते पारम्परिक रूप से क्रोध के दमन को प्रोत्साहित करता है, हॅलाकि वैश्विक आर्थिक व्यवस्था में स्थितियों और आचरण के नियमों में क्रोध की अभिव्यक्ति और संघर्ष करने की आवश्यकता होती है।

ममगाई, तिवारी (2016) एन.एस.एस.ओ. रोजगार और बेरोजगारी सर्वेक्षण सीमा को आधार के रूप में उपयोग करते हुए प्रस्तुत लेख 1990 के दशक के प्रारम्भ में आर्थिक सुधारों के आगमन के बाद से विभिन्न सामाजिक और धार्मिक समूहों से सम्बन्धित भारतीय युवाओं के बीच बेरोजगारी, रोजगार और

मानव पूँजी निर्माण के विषय पर चर्चा की गई है। इसमें सभ्य रोजगार बनाने के उपायों को मजबूत करने और भारतीय समाज के समूहों पर अधिक ध्यान देने के साथ युवाओं की शिक्षा और कौशल के स्तर में सुधार के लिए तर्क दिया गया है।

दास (2017) ने अपने लेख में छात्रों की अनुशासनहीनता और अशांति के शैक्षणिक और सामाजिक जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव को स्पष्ट किया। यह समस्या दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। और यह एक सार्वभौमिक समस्या बन गई है। छात्र के कारणों को समझने की तत्काल आवश्यकता है। छात्र हमारे देश का भविष्य है। परन्तु आज छात्र अनुशासन पूरे विश्व में एक मुख्य मुद्दा है जो कि हमारे देश की शिक्षा प्रणाली को खतरा पहुँचाता है। आवास गतिविधियों और उचित ध्यान की कमी छात्रों के जीवन और अवसाद को प्रभावित कर सकती है।

हेनरी (2018) युवा अशांति की व्याख्या और युवा अशांति के विरोधों के साथ जुड़ने का प्रयास किया और यह निर्धारित किया है कि राज्य द्वारा समस्त युवा कार्यकर्ताओं के लिए देशद्रोही और नकारात्मक व्यवहार किया जा रहा है, इस तरह की सक्रियता स्थानीय विरोधों का एकत्रीकरण नहीं है, बल्कि दुनिया के युवा लोगों के सबसे बड़े संघ द्वारा एक संगठित प्रयास है जिसमें वे दोषपूर्ण लोतान्त्रिक व्यवस्था का सुधार कर सकते हैं। सामाजिक विज्ञान संकाय पूर्वात्तर भारत के युवाओं पर अधिकांश रूप से युवा आन्दोलन या छात्रों के आन्दोलन पर ध्यान केन्द्रित करते हैं और युवाओं की समस्याओं को जानने और समझने का प्रयास किया।

डॉ० त्यागी (2019) ने भारत में युवा अशान्ति की स्थिति के लिए जिम्मेदार कारकों को स्पष्ट करते हुए वर्तमान परिदृश्य में युवाओं में व्यापक निराशा देखी गई है। उन्नत समकालीन समाजों में जो न केवल अशांति पैदा कर रहे हैं बल्कि युवाओं को विद्रोही भी बना रहे हैं। युवा हिंसक आन्दोलन के माध्यम से व्यवस्था के खिलाफ खुलकर विद्रोह कर रहे हैं। युवा अशांति की अव्यवस्थित भूमिका हैं परिवार और शोषण में माता–पिता और बच्चों के बीच स्नेहपूर्ण सम्बन्धों की कमी और राजनीतिक अधिकारियों द्वारों युवाओं को गुमराह करना, भ्रष्टाचार, रिश्वत, पक्षपात, सामाजिक–राजनीतिक, अनैतिकता इत्यादि युवा अशांति के लिए जिम्मेदार भी है।

अध्ययन का उद्देश्य –

1 भारत में वैश्वीकरण की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन

2 वैश्वीकरण के सन्दर्भ में युवा असन्तोष के कारणों का अध्ययन ।

3 युवा असन्तोष के पारिवारिक समायोजन एवं गतिशीलता पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन।

4 युवा असन्तोष के परिणाम स्वरूप युवाओं के विकास के मार्ग में आने वाली चुनौतियों का अध्ययन।

5 युवा असन्तोष को दूर करने हेतु सरकारी प्रयासों का अध्ययन।

अध्ययन की परिकल्पना –

1 युवा असन्तोष का प्रमुख कारक रोजगारो का अभाव है।

2 युवा असन्तोष के द्वारा युवाओं में पारिवारिक समायोजन एवं गतिशीलता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

3 युवा असन्तोष के द्वारा युवाओं को व्यक्तिगत एवं सामाजिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

4 युवा असन्तोष को दूर करने हेतु सरकारी प्रयास अपेक्षाकृत कम है।

शोध प्रचना –

प्रस्तुत शोध के अन्तर्गत वर्णनात्मक, विवेचनात्मक विधि का प्रयोग किया गया।

अध्ययन का समग्र–

प्रस्तुत शोध कार्य में अध्ययन का समग्र अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं, (एम.ए.) आगरा नगर में स्थित विभिन्न विद्यालय एवं विश्वविद्यालयों के छात्र–छात्राओं का अध्ययन किया जायेगा।

अध्ययन का क्षेत्र–

प्रस्तुत शोध कार्य में अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत आगरा नगर के आगरा कॉलेज सेंट जौन्स कॉलेज, आर.बी.एस. कॉलेज, बैकुण्ठी विद्यालय एवं विश्वविद्यालय के छात्र–छात्राओं का अध्ययन किया जायेगा।

अध्ययन की ईकाई–

वर्तमान शोध कार्य के अन्तर्गत अध्ययन की ईकाई छात्र एवं छात्राएँ होगी।

निर्दशन प्ररचना–

वर्तमान अध्ययन के अन्तर्गत उद्देश्यपूर्ण निर्दशन विधि का उपयोग किया जायेगा। प्रस्तुत अध्ययन से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त करने के लिए निर्दशन के रूप में छात्र–छात्राओं की लगभग 360 कुल इकाइयों का चयन उद्देश्यपूर्ण निर्दशन विधि के माध्यम से किया जायेगा जो कि अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत आने वाले आगरा नगर के स्नातकोत्तर (एम. ए.) विषय विभिन्न विश्वविद्यालय के कला संकाय से सम्बन्धित होगें।

आँकड़ों के संकलन के स्रोत–

वर्तमान शोध कार्य के अन्तर्गत प्राथमिक और द्वितीयक क्षेत्रों का प्रयोग किया जायेगा।

प्राथमिक स्त्रोत के अन्तर्गत–

अनुसूचि, और साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया जायेगा।

द्वितीयक स्त्रोत के अन्तर्गत–

पुस्तक, जर्नल, इन्टरनेट, पत्र–पत्रिका इत्यादि का प्रयोग किया जायेगा।

तथ्यों का विश्लेषण एवं सारणीयन–

तथ्यों को स्पष्ट करने हेतु विश्लेषण एवं सारणीयन किया जायेगा।

तथ्यों का चित्र में प्रदर्शन–

शोध कार्य के अन्तर्गत विश्लेषण एवं सारणीयन का चित्रों, ग्राफों, वृत्त चित्र द्वारा प्रदर्शन किया जायेगा।

प्रस्तावित अध्याय

प्रथम अध्याय–

- प्रस्तावना
- समस्या कथन

- अध्ययन का महत्त्व
- साहित्य का पुर्नविलोकन
- अध्ययन का उद्देश्य
- अध्ययनकी परिकल्पना
- शोध प्ररचना
- अध्ययन का समग्र
- अध्ययन का क्षेत्र
- आँकड़ों के संकलन के स्रोत
- तथ्यों का विश्लेषण एवं सारणीयन
- तथ्यों का चित्रमय प्रदर्शन

द्वितीय अध्याय–

भारत के वैश्वीकरण की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन।

तृतीय अध्याय–

वैश्वीकरण के सन्दर्भ में युवा असन्तोष के कारणों का अध्ययन ।

चतुर्थ अध्याय–

पारिवारिक समायोजन एवं गतिशीलता पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन।

पंचम अध्याय–

युवा असन्तोष के परिणामस्वरूप युवाओं के विकास के मार्ग में आने वाली चुनौतियों का अध्ययन।

षष्ठम अध्याय –

युवा असन्तोष को दूर करने हेतु सरकारी प्रयासों का अध्ययन ।

- निष्कर्ष
- संदर्भ ग्रन्थ

- परिशिष्ट
- साक्षात्कार, अनुसूची

सन्दर्भ सूची

- Altbach Philip, Student & Palitics in student Politics; ed by lipset op.
- Edward shits, Students, Politics and Universities in India in Turmail and Transition. Higher Education and Student Politics in India.
- C.N. Chitta Ranjan, Thought on student unrest, Social Determinant of Educability in India, edited by S.P. Ruhela, p. 160
- Dr. Brij Mohan, India's Social problems, p. 96-97
- Khusro, A.M.: A Survey of living and working conditions of students of the University of Delhi, Asia Publishing House Bombay
- Zakii : Youth unrest causes and remedies https://www.lawardo.com
- Keniston, Kenneth (1967) : The Sources of Student dissents, Journal of Social Issues, 23 (3), p. 120-30
- Ross, A.D. : Students Unrest in India' (A Comparative approach) Mc Gill, Queen's University Press, Montreal, London, 1968, p. 256
- Bhattarcharya, S. (1972) : A Study of students Unrest in world perspections, in singtivi L.M., (ed.), Youth Unrest, Delhi, National Publishing House.
- Murphy, H.B.M. (1974) : Thearies of Youth unrest in cross-cultural perspective, Austration & Newzeland Journal of Psychiatry.
- Harary, Subas Chandra (1988); Protest Politics of Student Youth in India, The Indian Journal of Political Science
- पार्सल, टी०एल० एण्ड ई०जी० मेनगन (1993), फैमली सोशल कैपिटल एण्ड चिल्ड्रिन्स विहैवियर प्रॉब्लम्स, सोशल साइकोलॉजी क्वाहर्ली, 56(2), पृ. 120–135

- Figueiredo, Roselle (2005) : Youth in the globlised world An Indian perspective.
- सिंह, के० आर० एवं सी० उपाध्याय (2007) अपराधी और गैर अपराधी प्रवृत्ति वाले व्यक्तियों के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन, इण्डियन जर्नल ऑफ सोशल साइन्स रिसर्च 3 (1), पृ. 17–21
- कुमार, राजेन्द्र (2007), युवावर्ग में बढ़ती अच्छृखलता नूतन प्रतिबिम्ब, राज्यसभा सचिवालय, राजभाषा प्रभाग, नई दिल्ली, सितम्बर, पृ. 62–65
- Channaveer, R.M. (2010) : Social and Economic Perspective of Student Unrest, Mumbai, Journal of Global Economy Research Center For Social Science, p. 149-159
- राउल, कमलाकान्त (2012), डिकोडिग डिसेंसी एण्ड वायलेंस, रोल ऑफ यूथ इन कटम्परेरी आडिशा, मेनस्ट्रीम, वा०–50, न०–38, 08–13 सितम्बर
- देवी, एस० (2013), राजनीति का अपराधीकरण, आई०जे०आर०ई०एस०एस० वा०–3, इश्यू–8, अगस्त, पृ. 60–63
- Dr. Sharma, Kapil Dev (2014). Modern Indian Youth: Reasons and Result of unrest and Core Agitation, Noida, Journal of Humanities and Social Sciences. p. 34-37
- शर्मा, एम०के० एण्ड पी० मरिमृत्थू (2014), प्रिवलेंस एण्ड साइको–सोशल फैक्टर्स ऑफ अग्रेशन उमंग यूथ, इण्डियन जर्नल ऑफ साइकोलॉजिकल मेडिसिन वा०–36, इश्यू–1, जनवरी, पृ. 48–53
- Dr. Lawani, B.T. (2015). The student unrest in the State of Manipur: An Empirical Analysis, Pune, Asian Journal of Research in Social Sciences and Humanities. p. 22-30
- Suchday, Sonia (2015): Anger and Globalization Among young people in India.
- Prof. Gogai, T.R. (2016) Youth Unrest : Crises in Ethics and Moralities, International Journal of Social Science and Humanities Research, p. 1-3
- Ahuja, Amit (2016); Need of value education for a Golbal Society, Amity International Journal of Teacher Education.

- Das, Dipshikha (2017); Student Indiscipline and Student Unrest in Relation to their Socio-Economic Background Political Influence and Academic Achievement, International Journal of Humanities and Social Sciences.
- Stabir Ahmad Sheitch, Irm Jalali Bodha and Majid Amin (2017) : Conflict, student Unrest and challenges : A study of students of Jammu and Kashmir, International Journal on Arts, Management and Humanities.
- Nikhila, Henry (2018) The Ferment. Youth unrest in India Macmillan Publication.
- Dr. Tyagi, Nidhi (2019); Social Institutions: A Symbal of Youth Unrest with Refference to advance Contemporary Society, International Journal for Innovative Research in Multidiciplinary Field.